ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592642

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

संगीत का चित्रकला से संबंध

डॉ. पूर्वी निमगांवकर [1]

[1] कंठ संगीत, महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर

शोध-सारांश
भारतीय प्राचीन संगीत का उल्लेख सन् 1922 ई. में पंजाब में मोहन जोदडो और हड़प्पा में हुई खुदाईयों में हुआ है। उनमें जो मुर्तियां प्राप्त हुई उनसे सिन्धु घाटी की सभ्यता का पता चलता है। पुरातत्ववेत्ताओं तथा इतिहासकारों की सहमति से ये ईसा 4500 से 5000 वर्ष पूर्व की है।

मुख्य शब्द – संगीत, चित्रकला, संबंध

Cite This Article: डॉ. पूर्वी निमगांवकर. (2019). "संगीत का चित्रकला से संबंध." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 268-269. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592642.

भारतीय संगीत का इतिहास, भगवतशरण शर्मा की पुस्तक के अनुसार[1] इन खुदाईयों में श्री शंकर भगवान की तांडव नृत्य करती हुई एक मूर्ति, एक नारी की मूर्ति जो नृत्य मुद्रा में है मिली। इसके साथ ही ऐसे कई चित्र भी मिले है, जिनमें नृत्य के उत्कृष्ट नमूने भी प्राप्त हुए। एक ऐसी मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई जिसके गले में ढोल जैसा वाद्य है, और एक वाद्य जो आधुनिक मृदंग के पूर्वज जैसा भी प्राप्त होता है। कई चित्रों में वीणा का मूल रूप तथा "कर ताल" ऐसे वाद्य दिखाई पड़ते है। इतनी प्राचीन संस्कृति जिसमें दो विभिन्न कलाएँ संगीत और चित्र कला का उद्‌गम लगभग साथ ही हुआ होगा, ऐसा प्रतीत होता है।

भारतीय संगीत गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं से मिलकर बना है, इसमें सूर, लय, तथा ताल के साथ ही सौन्दर्यता तथा बंदिश के भाव, भाषा का भी अत्यंत महत्व है। प्राचीन इतिहास में मूर्तिकला एवं नृत्य कला के इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि मुर्तियों की भाव भंगिमाओं तथा उनके द्वारा धारण किये गये वाद्य संगीत के अस्तित्व तथा स्थापित होने के प्रमाण है। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत जैसे प्राचीन मंदिरों तथा धार्मिक ग्रंथो के साथ ही भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन देशी प्रान्तीय लोक संगीत में जिस प्रकार उल्लेखित है, उसी प्रकार मंदिरो तथा धार्मिक स्थलो पर भगवान श्री कृष्ण एवं राधा की मूर्तियों का अत्यंत सुंदर तथा आकर्षक चित्रण मंदिर की दीवारों तथा धार्मिक स्थलों पर बनाये हुए मिलते है। अर्थात संगीत और चित्रकला के स्थापित होने का समय साथ-साथ ही होगा। संगीत विषय में कलाकार मनोवृत्ति से चित्र पटल पर अपनी कला की अभिव्यक्ति करता है एवं चित्रकला में कलाकार उन भावों को मूर्त रूप देकर एक साक्षात उदाहरण प्रस्तुत करता है।

कला विभिन्न रसों से मिलकर ही बनी है, जैसे :- श्रृंगार रस, भक्ति रस, रौद्र रस, आध्यात्मिक रस, शांत रस इन सबको गायन के परिप्रेक्ष्य में अर्थात संगीत के दृष्टिकोण से भाषा, स्वर एवं ताल के द्वारा अभिव्यक्त किया

जाता है। गायन में श्रृंगार रस की अनुभुति का अनुभव करना अत्यंत आनंदिक तथा वैशिष्ठतापूर्ण होता है। विभिन्न प्रकार के रागो के समय प्रातः कालीन, दोपहर तथा सांध्य कालीन निश्चित है। अतः श्रृंगारिक बंदिशों के विषय भिन्न-भिन्न हो सकते है तथा विषयानुसार उस रस का आस्वाद लिया जा सकता है। जैसे पं. विष्णु नारायण भातखंडे कृमिक पुस्तक मालिका पर उल्लेखित बंदिश ''आज को सिंगार सुभग, सांवरे गुपाल जू को, कहत, तन बन आवे। देख हि बन आवेरी।[2] यह बंदिश श्री कृष्ण भगवान के श्रृंगार का वर्णन करती हुई प्रतीत होती है। उनके द्वारा धारण किये गये अलंकार तथा भाव भंगिमाओं ने सबके चित्त को हर लिया है।

राग रचनांजली - भाग 2, डॉ. अश्विनी भिडे देशपांडे जी द्वारा उल्लेखित राग ललित की बंदिश ''कमल पंखुडी खोलो नंदलाल, भोर भयी अंजना'' दिनकर बाँ पसारत अपनी बिखर करत सोना कन्हैया, भोर भयी अँगना तिहारी।[3] इस अत्यंत सुंदर, आकर्षक और मनोहारी बंदिश में श्री भगवान कृष्ण के नयनों को कमल के फूल की पंखुडी की उपमा दी गयी है। इन श्रृंगारिक बंदिशो के भाव श्रवण करने तथा मानसिक पटल पर अनुभव करने से ही इनका आनंद लिया जा सकता है। अर्थात संगीत में मानसिक चित्र पर कलाकार अपनी अभिव्यक्ति के रंग भरता है। इसी प्रकार इन्ही श्रृंगारिक भावो को यदि चित्रकार कैनवास पर उतारकर उनके हाव-भाव, साक्षात रूप में प्रस्तुत करता है, तब एक तृप्ति तथा आनंद का भाव अलग ही दिखाई देता है। अर्थात दोनो कलाओं को अनुभव करके आनंद की प्राप्ति विभिन्न माध्यमों से की जा सकती है। उसी प्रकार यदि आध्यात्मिक रस का भाव संगीत के दृष्टिकोण से कुछ अलग सुनाई पडता है। जैसे राग चारूकेशी में निहित यह बंदिश ''परमात्मा तुम हो जग के त्रैलोक्य हो, ब्रम्हाण्ड हो।[4] मेरी पुस्तक स्वरार्पण में पृष्ठ संखया 32 पर यह बंदिश अंकित है। उक्त बंदिश में एक ''शक्ति पुंज'' का भाव प्रदर्शित किया गया है, जिसमें परमात्मा को संपूर्ण ब्रम्हाण्ड की उपमा दी गयी है। यही भाव एक चित्रकार द्वारा आध्यात्मिक भावो से संबंधित रंगो को उकेर कर भावाभिव्यक्ति कर सकता है। अर्थात विषय से संबंधित भाव, गायन तथा चित्रकला दोनो कलाओं से प्रदर्शित किये जा सकते है।

संगीत में उपयुक्त विभिन्न रागों के स्वभावानुसार बंदिशों की निर्मित तथा उनका चलन निश्चित होता है, जैसे राग-भैरव, रौद्र रस, राग मालकौंस - भक्ति रस, राग बसंत बहार श्रृंगार रस से परिपूर्ण है यह इन रागो के स्थायी भाव है परन्तु बन्दिशकार अपनी क्षमता से इन्ही रागो में विभिन्न रसों की भी बंदिशों की निर्मिती कर सकता है। अर्थात स्थायी भाव के दो उप रूप भी हो सकते है। चित्रकला में यदि स्वयं कल्पना से निर्मित चित्रों के भाव प्रदर्शित हो, तो वह मूल तथा स्थायी हो सकते है। अर्थात बनाये गये चित्रों का अनुसरण कर हम राग को निश्चित कर सकते है, यदि हमें उन्हें पारस्परिक जोडने का प्रयास करना हो। इस शोध-पत्र में हमने यह अनुभव किया कि भारत के यह दो बहुमूल्य तथा अमिट कलाएँ है जो अपने जड़त्व को दिन-प्रतिदिन शक्ति प्रदान करती है, एवं इन दोनो कलाओं की आत्मा तो एक ही है। परन्तु इन्हें अभिव्यक्त करने के माध्यम भिन्न हो सकते है। इन अमुल्य कलाओं की विरासत से हमारा भारत देश समृद्ध और सशक्त है। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है।

संदर्भ

[1] भारतीय संगीत का इतिहास, भगवत शरण शर्मा, पृष्ठ संखया - 24
[2] पं. विष्णु नारायण भातखंडे कृमिक पुस्तक मालिका 2, पृष्ठ संखया - 110
[3] राग रचनांजली भाग 2, डॉ. अश्विनी भिडे देशपांडे, पृष्ठ संखया – 3
[4] स्वरार्पण, डॉ. पूर्वी निमगांवकर, पृष्ठ संखया - 32